27/01/2021

Class - IV

विराम-चिह्न (2nd part)

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!) :—

विस्मय, हर्ष, शोक और घृणा आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्य के अंत में विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है।
जैसे — हर्ष → अहा! मुझे परीक्षा में प्रथम स्थान मिला है।
घृणा → धिः! कैसी दुर्गंध आ रही है।
शोक → हाय! वह घायल हो गया।
विस्मय → अरे! कितनी ऊँची मीनार है।

6. कोष्ठक ( ) :— किसी पद का अर्थ प्रकट करने के लिए अथवा किसी वाक्यांश का अर्थ दर्शाने के लिए अथवा नाटक के कथन के पूर्व पात्र में चेष्टादि चित्रांकन हेतु कोष्ठक (( )) का प्रयोग होता है।
जैसे — ऐसे व्यक्ति (दुर्जन) से दूर ही रहना चाहिए।
चंद्रगुप्त: (क्रोध में) हम शत्रुओं का मुहतोड़ जवाब देंगे।
यहाँ आयुर्वेद (जीवनदान देने वाली विद्या) की शिक्षा दी जाती है।

7. योजक-चिह्न (-) - दो शब्दों को जोड़ने अथवा तुलना करने के लिए योजक-चिह्न (-) का प्रयोग किया जाता है।
जैसे - माता-पिता, दिन-रात, आज-कल आदि।
चाँद-सा मुख, मछली-सी आँखें आदि।
कभी-कभी, धीरे-धीरे आदि।

8. उद्धरण चिह्न (" ") - जब किसी के द्वारा कही गई बात को उसी रूप में प्रकट किया जाता है तो उद्धरण चिह्न प्रयोग होता है।
जैसे - गांधी जी ने कहा, "सत्य ही ईश्वर है।"
नेहरू जी ने कहा, "आराम हराम है।"